॥ श्री ॥

तत्त्वार्थसूत्र

TATTVAARTHASUTRA

उमास्वामी · २–३वीं शती · अभिलेख १२/९०

श्री कुंदकुंद स्वामी → उमास्वामी

संक्षिप्त परिचय

आचार्य उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य) कृत — सम्पूर्ण जैन दर्शन को संस्कृत सूत्र-शैली में बाँधने वाला युगान्तरकारी ग्रन्थ; 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' से आरम्भ होकर दस अध्यायों में सात तत्त्वों का प्रतिपादन।

जैन परम्परा में सर्वाधिक टीकाएँ इसी पर लिखी गईं — सर्वार्थसिद्धि (पूज्यपाद), राजवार्तिक (अकलंक), श्लोकवार्तिक (विद्यानन्द) आदि। इसे 'मोक्षशास्त्र' भी कहते हैं।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

तत्त्वार्थसूत्र — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक १२ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता उमास्वामी; रचना-काल २–३वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६७) के अनुसार इनका समय १७९–२४३ है तथा गुरु श्री कुंदकुंद स्वामी। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "तत्त्वार्थसूत्र" उल्लिखित है। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, नियमसार परिगणित हैं।

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम · कसायपाहुड · समयसार · प्रवचनसार · पंचास्तिकाय · नियमसार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति १२ — मूल छायाचित्र

← भगवती आराधना

रत्नकरण्ड श्रावकाचार →